आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2690 • उदयपुर, शनिवार 07 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कांचीगुड़ा (कुक्कटपल्ली) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को श्री श्याम मंदिर नजरेक काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन, हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री श्याम बाबा सेवा समिति, काचीगुड़ा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 26, कृत्रिम अंग वितरण 20, कैलिपर वितरण 14 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि परमपूज्य हर्ष नंद जी महाराज (हैदराबाद, योग गुरु), अध्यक्षता परमपूज्य कमलेश जी महाराज (हैदराबाद, योग गुरु), विशिष्ट अतिथि श्री रामदेव जी अग्रवाल (श्री श्याम बाबा सेवा समिति), श्री रितिश जी जागीदार (परणी मित्र फाउंडर), श्रीमती सुमित्रा जी (महिला मोर्चा अध्यक्ष, सिकदंराबाद), रम्या जी (सत्य साक्षी संघ, कुक्कटपल्ली) रहे।

श्री नाथूसिंह जी शेखावत (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (शिविर सह प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक), महेन्द्र सिंह जी (हेदराबाद आश्रम प्रभारी) ने भी सेवायें दी।

पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को गजानन मंगलम शंकर नगर पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता दिव्यांग सेवा समिति पुसद (महाराष्ट्र) रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 162, कृत्रिम अंग माप 31, कैलिपर माप 10 की सेवा हुई तथा 37 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनिल जी आडे (उपविभागीय पुलिस अधिकारी, पुसद) अध्यक्षता डॉ. किरण सुकतवाउ (मुख्या अधिकारी नगर परिषद, पुसद) विशिष्ट अतिथि डॉ. सिमलाई वानखेड़े (अधीक्षक, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् राम महाराज (भागवताचार्य दिग्रस), श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़ (अध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्री राधेश्याम जी जांगीड़ (अध्यक्ष, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् दयाराम जी चव्हाण (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्रीमान् हरिप्रसाद जी विश्वकर्मा (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), विनोद जी राठौड़ (सेवा प्रेरक, नांदेड़) रहे।

डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), किशन जी सुथार (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 08 मई, 2022

- रामपुर, उत्तरप्रदेश
- मनसा, पंजाब
- औरंगाबाद

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 8 मई, 2022

स्थान

महाजन भवन, सालीमार रोड, जम्मु

दिपचंन मंगल कार्यालय राजापेठ, अमरावती, महाराष्ट्र

होटल रेगल, कपूल कम्पनी चौक, रेलवे स्टेशन के पास, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

एकाग्रता का महत्व

वीर बहादुर एक सर्कस में काम करता था। वह खतरनाक शेर को भी कुछ ही समय में पालतु बना लेता था। एक दिन सर्कस परिवार में एक नौजवान आया। वह जानवरों के हाव–भाव और हरकतों पर रिसर्च कर रहा था।

उसने वीर बहादुर से कहा, 'आपका बहुत नाम सुना है। खतरनाक शेर को भी पालतू कैसे बना लेते है आप? वीर बहादुर ने मुस्करा कर कहा, 'देखो, यह कोई राज नहीं है। तुम बड़े सही मौके पर आए हो। मैं इन दिनों एक खतरनाक शेर को पालतू और सामान्य बनाने की कोशिश में जुटा हूं। वह कई लोगों को अपना शिकार बना चुका है। तुम मैरे साथ चलना और वहां खुद देखना कि मैं कैसे यह काम करता हूं। नौजवान ने देखा कि वीर बहादुर ने अपने साथ न कोई हथियार लिया और न ही कोई बचाव के लिए दूसरी चीज। उसने अपने साथ बस एक लकड़ी का स्टूल लिया। वह हैरान था कि स्टूल से वीर बहादुर खतरनाक शेर को कैसे काबू कर लेगा। शेर जैसे ही वीर बहादुर की तरफ गरज कर लपकता, वह स्टूल के पायों को शेर की तरफ कर देता। शेर स्टूल के चारों पायों पर अपना ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता और असहाय हो जाता। ध्यान बंटने के कारण कुछ ही देर बाद शेर निस्तेज हो जाता है। कुछ ही दिनों में वह वीर बहादुर का पालतू बन गया। इसके बाद वीर बहादुर ने नौजवान से कहा, 'अक्सर ऐसा होता है कि एकाग्र व्यक्ति साधारण होने पर भी सफल हो जाता है, लेकिन असाधारण व्यक्ति भी ध्यान बंटने के कारण शेर की तरह पराजित हो जाता है।' नौजवान ने तभी तय कर लिया कि वह जीवन में हर काम एकाग्र होकर ही करेगा ...!!

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

इस कथा में अपने अंग प्रत्यंग को अपने 70 हजार करोड छ–खरब कोशिकाओं को अपने उत्तकों को, अपने अवयवों को और हमारे ये देह–देवालय के हेड मास्टर साहब प्रिंसिपल साहब ये तो ब्रेन का एक भाग है, ये दूसरा भाग है। ऐसे ब्रेन के चार भाग हैं इन भागों को सबको मिलाकर के तेजस्वी जी को प्रणाम कीजिए। स्वयं प्रभाजी को प्रणाम कीजिए। स्वयं प्रभा जी ने कहा आइये–आइये। आओ प्रिय बजरंग बली हनुमान जी पधारो, अंगद जी पधारो–पधारो, जामवंत जी पधारो जल पीजिए आप। जलपान कीजिए। आप अपनी थकान को मिटा लीजिए और तेजस्वी जी ने कहा, स्वयं प्रभाजी ने कहा मैं जानती थी आप पधारोगे। जब सब वानरों को थके हुए देखा स्वयं प्रभा जी ने कहाँ आप जरुर सीता जी का पता लगा लेगे। अंगद जी आप तो युवराज हैं अभी थोड़ी देर पहले आप सोच रहे थे ये तो भगवान राम जी ने मुझे बचा लिया अन्यथा जब मेरे पिता बालि का वध किया तो सुग्रीव तो उसी समय मुझे मार डालता मैं बच भी नहीं पाता लेकिन भगवान ने मुझे बचा लिया। और जामवंत जी आप तो रीछों के पति है। रीछों के राजा है आप चिंता मत कीजियेगा अशोक वाटिका में हनुमान जी पहुँच जायेगे। मैं आपको समुद्रतट पर आपको पहुँचा देती हूँ। और उन्होंने कहा आप अपने नेत्रों को मूंद लीजिए। कभी–कभी आप और हम भी ध्यान अवस्था में चले जाया करो। कभी – कभी लगना चाहिए अपने आपको देख लेना चाहिए अरे हमारी आत्मशक्ति हम नहीं बढ़ायेगें तो कौन बढ़ायेगा ? माता और बहनों आप चिन्ता मत कीजिए। ये चिन्ताएं आपके चित्त का हरण कर लेती है ये चिता तो मरे हुए को जलाती है और चिंता तो जीवित को जला देती है। आप सबके प्रति प्रेम दीजिए लेकिन चिन्ताओं को तिलाजंलि दे दीजिए। आज मेरा निवेदन ये है सत्संग में और सब कपियों ने नेत्र बन्द किये। और स्वयं प्रभाजी ने ऐसा ध्यान में चमत्कार किया कि सारे महानुभावों ने सब वानरों ने अपने आपको समुद्रतट पर पाया।

समन्वय से ही परिवार में खुशी

परिवार में एक की सफलता सबकी सफलता होती है। अगर हम बहस करके एक–दूसरे को नीचा दिखाएं तो, पूरे परिवार के लिए दुःखदायी होगा। इसीलिए परिवार को तोड़ना नहीं जोड़न सीखे, ऐसा करने से आप खुशहाल और शांतिपूर्ण परिवार का हिस्सा बन जायेंगे।

दों परिवार एक–दूसरे के पड़ोस में रहते थे। एक परिवार हर वक्त परस्पर लड़ता ही रहता था, जबकि दूसर परिवार सभी के साथ शांति और मैत्रीपूर्ण तरीके से रहता था। एक दिन, झगड़ालू परिवार की पत्नी ने शांत पड़ोसी परिवार से ईर्ष्या महसूस करते हुए अपने पति से कहा, अपने पड़ोसी के वहां जाओ और देखो कि इतने अच्छे तरीके के लिए वो क्या करते हैं। पति वहां गया और छूप के चुपचाप देखने लगा।'

उसने देखा कि घर की मालकिन फर्श पर पोंछा लगा रही है। अचानक रसोई से कुछ आवाज आने पर रसोई में चली गई। तभी उसका पति एक कमरे की तरफ भागा। उसका ध्यान रहने के कारण फर्श पर रखी बाल्टी से ठोकर लगने से बाल्टी का सारा पानी फर्श पर फैल गया। उसकी पत्नी रसोई से वापिस आयी और अपने पति से बोली, माफ करना जी! यह मेरी गलती थी कि मैंने रास्ते से बाल्टी को नहीं हटाया। पति ने जवाब दिया, "नहीं भाग्यवान, मेरी गलती है, क्योंकि मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। झगड़ालू परिवार का पति जो छुपा हुआ था वापस घर लौट आया, तो उसकी पत्नी ने पड़ोसी की खुशहाली का राज पूछा। पति ने जवाब दिया, उनमें और हम में बस यहीं अंतर है कि हमेशा खुद को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। एक–दूसरे को को गलती के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। जबकि वो हर गलती के लिए खुद जिम्मेदार बनते हैं और अपनी गलती मानने के लिए तैयार रहते हैं।

एक खुशहाल और शांतिपूर्ण रिश्तें के लिए जरूरी है कि हम अपने अहंकार को एक–दूसरे रखें और अपने स्वयं के हिस्से के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी को ध्यान में रखें। एक–दूसरे को दोशी ठहराने से दोनों का नुकसान होता है और अपने रिश्तें भी खराब हो जाते हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

ईश्वर की आराधना के अनेकानेक स्वरूप प्रचलन में है। इनमें एक है जरूरतमंदों की उपयुक्त सेवा । सेवा शब्द यों तो इतना व्यापक है कि प्रत्येक क्रियाकलाप को इसके अंतर्गत परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु सेवा का एक प्रभावी रूप है किसी भी जरूरतमंद की सहायता जो उसे तत्काल आवश्यक है।

आज अनेक व्यक्ति अज्ञान पीड़ित हैं, कई लोग रोजगार विहीन हैं, कई स्वास्थ्य से पीड़ित हैं तो कई अन्य परिस्थितियों से। इनमें भी जो रोग से, दिव्यांगता से, निर्धनता से पीड़ित हैं उनको तो तुरंत सहयोग चाहिए ही ।

इस प्रकार के सहयोग के लिए वर्तमान में अनेक संस्थान, अनेक संगठन व अनेक व्यक्ति सेवारत हैं। यह सही है कि पीड़ितों की तुलना में सेवा करने वालों की संख्या अत्यधिक न्यून है, पर बहुत कुछ हो रहा है। इस प्रकार के सेवा कार्यों में प्रमुखतः संसाधनों का भी प्रमुख सहयोग होता है। लेकिन साधनों से भी ज्यादा महत्व है– सेवा के लिए अंतरमन से उठे भावों का। हर एक व्यक्ति के मन में यदि सेवा की भावना जग जाए तो संसाधन तो स्वतः जुटने लगते है। प्राथमिक कार्य है सेवा के विचारों का प्रसारण। जरूरी है सेवा के बीजों का रोपण। यह कार्य किसी वैचारिक अभियान से ही संभव है ।

कुछ काव्यमय

सत्य, दया, करुणा नहीं, उपजी मन के द्वार।
वो मानव की देह में, इस धरती पर भार।।
मानव जीवन है सफल, परहित आये काम।
बाकी तो ढल जायगी, इस जीवन की शाम।।
जो ईश्वर आदेश का, पालन करना चाह।
तो विचलित हो मन भला, सुने किसी की आह।।
जब भी मन में उपजता, पीड़हरण का भाव।
समझो मन में हो रहा, प्रभु का आविर्भाव।।
जिसके भी मन में बसे, सद्गुण अरु सद्भाव।
वो निश्चिंत बना रहे, पार लगेगी नाव।।

अपनों से अपनी बात

विवेक का फैसला

सफलता का श्रेय किसे मिले इस प्रश्न पर एक दिन विवाद उठ खड़ा हुआ। 'सकल्प' ने अपने को, 'बल' ने अपने को और 'बुद्धि' ने अपने को, अधिक महत्वपूर्ण बताया। तीनों अपनी–अपनी बात पर अड़े हुए थे। अन्त में तय हुआ कि 'विवेक' को पंच बना इस झगड़े का फैसला कराया जाय।

तीनों को साथ लेकर 'विवेक' चल पड़ा। उसने एक हाथ में लोहे की टेढ़ी कील ली और दूसरे में हथौड़ा। चलते–चलते वे लोग ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक सुन्दर बालक खेल रहा था। विवेक ने बालक से कहा कि –'बेटा, इस टेढ़ी कील को अगर तुम हथौड़ा से ठीक कर सीधी कर दो तो मैं तुमको भर पेट मिठाई खिलाऊँगा और खिलौने से भरी एक टोकरी भी दूँगा।' बालक की आँखें

चमक उठी। वह बड़ी आशा और उत्साह से प्रयत्न करने लगा, पर कील को सीधा कर सकना तो दूर उससे हथौड़ा उठा तक नहीं। भारी औजार उठाने के लायक उसके हाथों में बल नहीं था। बहुत प्रयत्न करने पर सफलता नहीं मिली तो बालक खिन्न होकर चला गया। इससे उन लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि सफलता प्राप्त करने के लिए केवल 'संकल्प' ही काफी नहीं है। चारों आगे बढ़े तो थोड़ी दूर जाने पर एक श्रमिक दिखाई दिया। वह खर्राटे लेता सो रहा था। विवेक ने उसे झकझोरकर जगाया ओर कहा कि "इस कील को हथौड़ा मारकर सीधा कर दो, मैं तुम्हें दस रुपया दूँगा। उनींदी आँखों से श्रमिक ने कुछ प्रयत्न भी किया, पर वह नींद की खुमारी में बना रहा। उसने हथौड़ा एक ओर रख दिया और वहीं लेटकर फिर खर्राटे भरने लगा। निष्कर्श निकला कि अकेला 'बल' भी काफी नहीं है।

सामर्थ्य रखते हुए भी संकल्प न होने से श्रमिक जब कील को सीधा न कर सका तो इसके सिवाय और क्या कहा जा सकता था? विवेक ने कहा कि हमें लौट चलना चाहिये, क्योंकि जिस बात को हम जानना चाहते थे वह मालूम पड़ गई। एकाकी रूप में आप लोग तीनों अधूरे–अपूर्ण हैं।"

– कैलाश 'मानव'

सुख दुःख, मन की सोच

सुख–दुःख मन की सोच होती है। जैसा मन होता है, वैसा ही भाव पैदा हो जाता है। कोई सुख में दुःख ही ढूँढ़ता रहता है तथा कोई दुःख में भी सुख ढूँढ़ ही लेता है। सही कहा गया है –मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

एक बार किसी राज्य में आकाशवाणी हुई कि आज कल्पवृक्ष का धरती पर अवतरण हुआ है, अतः सभी लोग ध्यानपूर्वक सुनें कि उनके जितने भी दुःख हैं, उन्हें कल्पना की गठरी में बाँधकर रात्रि 12 बजे से सुबह सूर्य की पहली किरण निकलने तक राज्य की अमुक जगह पर रख आना है तथा वहाँ से इच्छित सुखों की गठरी ले आएँ। बार–बार यह आकाशवाणी होती रही, जिससे जिन लोगों में इस बात का अविश्वास था, वे भी अब यह मानने लगे कि वास्तव में कल्पवृक्ष का अवतरण है, अतः सुख अवश्य मिलेंगे।

सभी लोग योजना बनाने लगे कि रात्रि 12 बजे दुःखों की गठरी बनानी है, उसे छोड़कर आना है तथा सुखों की गठरी लानी है। अमीर क्या, गरीब क्या,

सभी लोग अपने दुःखों की गठरियाँ लेकर जाने लगे।

वे सभी छोटी–छोटी चींटियों के समान दिखाई दे रहे थे। वहाँ एक साधु बाबा भी रहते थे। उनको भी लोगों ने अपने दुःखों की गठरी लाने हेतु कहा। परन्तु बाबा ने मना कर दिया। जब सभी लोग सुखों की गठरी लेकर वापस आए तो उन्होंने देखा कि जो छोटी–छोटी झोपड़ियाँ थीं, वे सभी महलों में बदल गईं थीं। वे जो सुख चाहते थे, उन्हें वे सभी सुख प्राप्त हो गए। आश्चर्य से उन सभी लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं। आखिरकार भविष्यवाणी सत्य साबित हो गई थी। सभी लोग बहुत खुश हो गए। परन्तु कुछ ही क्षणों पश्चात् सभी दुःखी भी हो गए। अब पुराने दुःखों की जगह नए दुःखों ने ले ली थी, क्योंकि पड़ोसी का घर या महल मेरे से बड़ा व भव्य कैसे हो गया? दूसरों के सुख से दुःखी होने का क्रम बन गया। अब लोगों के मन में नए दुःख पैदा हो गए।

चित्त वही, मन वही, विचार वही, विकार वही, बदला तो केवल सुख और दुःख। जिस व्यक्ति के मन में ईर्ष्या, लोभ–लालच तथा द्वेष हो तो कितने ही पुराने दुःख बदल जाएँ तो भी उनके मन में नए दुःख आ ही जाएँगे तथा कितने ही सुख आ जाएँ, तब भी उनके मन में दुःख आ जाएँगे। सभी लोग मन से दुःखी थे, तब उन्हें वही संन्यासी मिला।

उन्होंने उस संन्यासी से कहा–अगर आप भी आ जाते तो आपको भी धन–वैभव प्राप्त हो जाता। तब संन्यासी ने कहा–तुम ये सब प्राप्त करके अंदर से सुखी हो क्या? क्या तुम्हारे सभी दुःख समाप्त हो गए? लोगों ने उत्तर दिया – हम अन्दर से सुखी तो नहीं हैं। परन्तु क्या आप सुखी हैं?

साधु ने कहा – जिस सुख को तुम बाहर खोजते हो, मैं उसे अपने मन के भीतर खोजता हूँ और मैं खुश हूँ। सुख–दुःख मन के अन्दर होता है, बाहर नहीं। ये दोनों व्यक्ति की सोच में है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

उदयपुर के आसपास भी ऐसे अनेक गांव थे जहां के हालात बीसलपुर क्षेत्र के गांवों जैसे ही थे। कैलाश ने वस्त्र वितरण का अभियान इन्हीं गांवों से शुरु किया। क्षेत्र के वनवासी व आदिवासी अंचलों के अलसीगढ़ व पाई गांवों में सबसे पहले गये। कपड़े भी 500–600 के लगभग एकत्र हो गये थे। जो आनन्द सत्तू वितरित करने में आता था उसी की पुनरावृति यहां भी होने लगी बल्कि यहां प्राप्त होने वाले आनन्द की कोई सीमा नहीं थी। बीसलपुर का कार्य तो एक तरह से राजमल जी भाईसा के कार्य में हाथ बंटाना था, मगर यहां का कार्य तो पूरा का पूरा उसी का था।

कपड़ों के साथ साथ अब उसने बिना अवधि पार होने वाला दवाइयां भी एकत्र करना शुरु कर दिया। हर घर में ऐसी दवाइयां मिल ही जाती हैं। अवधि पार होने के बाद तो उन्हें फेंकना ही पड़ता है मगर उसके पहले घर में बेकार पड़ी ऐसी दवाइयां किसी के काम आ जाये तो इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती है। सरकारी कर्मचारियों के घरों से इस तरह की दवाइयां खूब एकत्र होने लगी। पुनर्भरण की व्यवस्था होने के कारण कर्मचारियों के घर में दवाएं रहती ही हैं। इस तरह की दवाएं भी जब भारी मात्रा में एकत्र होने लगी तो इन्हें रखने की समस्या हो गई।

सेटेलाईट अस्पताल पास ही था। अब तक कैलाश की भी क्षेत्र में और अस्पताल में पहचान बन गई थी। उसने मित्रों की मदद से एक अलमारी खरीदी और अस्पताल के डाक्टरों से अनुमति लेकर वह अलमारी सेटेलाईट अस्पताल में ही रखवा दी। अलमारी में सभी प्रकार की एकत्र हुई दवाएं रख दीं। अलमारी की एक चाबी अस्पताल में रख दी तथा एक चाबी कैलाश ने अपने पास रख ली। अस्पताल के डॉक्टरों को खुली छूट दे दी कि किसी भी जरूरतमंद रोगी को दवा की आवश्यकता हो तो अलमारी से निकाल कर दे दे। यह सिलसिला चल गया। कैलाश अपने साथियों के साथ दवाएं एकत्र कर लाते रहे और डॉक्टर गरीब रोगियों के लिये उनका उपयोग करते रहे।

कैलाश उदयपुर के बड़े अस्पताल में जाता तो वहां निःशुल्क भोजन व्यवस्था देख उसका मन करता था कि ऐसी ही व्यवस्था सेटेलाईट अस्पताल में भी शुरु की जाये। यहां भी कम से कम 20 रोगी तो हर समय भर्ती रहते ही थे। बड़े अस्पताल में तो बहुत बड़े पैमाने पर यह काम होता था, भोजन भी वहीं बनता था। यहां यह संभव नहीं था। यहां के लिये तो बाहर ही कहीं से भोजन बनवा कर लाने और वितरित करने का विकल्प था। अब यह समस्या उत्पन्न हो गई कि भोजन कौन बनाये। दो चार लोगों से बातचीत की तो कोलोनी में ही रहने वाले सोहनलाल विजयवर्गीय की पत्नी भोजन बना कर देने के लिये तैयार हो गई। उसे 20 व्यक्तियों के भोजन की राशि तय कर ली। यह राशि आपस में ही एक दूसरे से एकत्र हो जाती। कैलाश के साथियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अब उसे 5–7 लोगों काक तो सतत सहयोग मिलने लगा था। कई अन्य भी थे।

अंश - 087

नकसीर आए तो खून निगलें नहीं 10 मिनट तक बर्फ से सिकाई करें

नकसीर गर्मी के दिनों में ज्यादातर होती है। यह समस्या गर्मी के दिनों में नाक की कोशिकाओं में संकुचन होने और नाक की अंदर की सतह सूखने के कारण होती है।

क्या तरीका अपनाएं : नकसीर आने पर मरीज को छाया में लेकर आएं। उसे कुर्सी पर बिठाएं। सिर को 90 डिग्री एंगल पर रखते हुए अंगूठा और एक उगली से नाक बंद करें। 10 मिनट तक नाक की बर्फ से सिकाई करें या रूमाल को भिगो लें और इसे नाक पर रख लें। बाजार में मौजूद नेजल स्प्रे ला सकते है या फिर घर पर बनाने के लिए 300 एमएल पानी में दो चम्मच सोडा और एक चम्मच नमक घोल लें और इससे नाक धोएं।

नाक सूखने पर : नाक की सतह पर पेट्रोलियम जैली लगाकर मसाज करें। पतीले में पानी लेकर उबालकर सिर ढंककर भाप लें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

निराश्रित बालगृह के बच्चों का दंत परीक्षण

गीतांजलि डेन्टल एण्ड रिसर्च इन्स्ट्रीट्यूट की टीम ने गुरुवार को नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित निराश्रित बालगृह के बच्चों का दन्त परीक्षण किया। संस्थान के बड़ी स्थित परिसर के प्रभारी राकेश जी शर्मा ने बताया कि डॉ. मनस्वी जी भटनागर, डॉ. वैशाली जी जिन्दल, डॉ. सौम्या जी कौशल व डॉ. मनसिमरन जी की टीम ने 281 बच्चों के दांतो की जांच की। इनमें से ज्यादातर बच्चों के दांतो की सफाई की गई एवं कुछ को नियमित रूप से दवा लेने की सलाह दी गई। इन्स्टीट्यूट के जनसम्पर्क अधिकारी गजेन्द्र सिंह जी ने बताया कि कुछ दिन बाद फोलोअप किया जाएगा।

दृष्टिबाधित बच्चों को बल्ला-बॉल भेंट

नारायण सेवा संस्थान की ओर से बुधवार को अम्बामाता स्थित राजकीय प्रज्ञाचक्षु उच्च माध्यमिक आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों को क्रिकेट बेट व बॉल भेंट की गई। संस्थान के अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बच्चों से उनके शिक्षण, खेलों में रूचि और समाज से अपेक्षाओं को लेकर बात–चीत की।प्राचार्य नीलम जी माहेश्वरी ने बताया कि संस्थान ने विद्यालय में पढ़ रहे निर्धन 51 बच्चों को उनके आयुवर्ग के अनुरूप क्रिकेट बेट दिए जबकि बॉल विशेष रूप से प्रज्ञाचक्षु खिलाड़ियों के लिए ही थी, जिसमें बॉल बियरिंग होते हैं और विकेट पर फेंके जाने के दौरान उसमें से ध्वनि निकलती है, प्रज्ञाचक्षु खिलाड़ी उसी ध्वनि को लक्ष्य कर खेलता है। इस दौरान संस्थान के जनसम्पर्क अधिकारी विष्णु शर्मा जी हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़ तथा शिक्षक रमिला जी पगारिया, फारूक खान जी मौजूद रहे।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

इधर सेवाधाम का उदघाटन पूरा हुआ, जसवन्तगढ क्षेत्र में पिछली कुछ पंक्तियों में आपने पढा, मोकेला सुथारी प्रशिक्षण केन्द्र सूरण, जोशियों की भागल, उन्हीं दिनों प्रमोशन हुआ, सीनियर एकाउण्ट ऑफिसर का। परमात्मा ने बना दिया। फिर ट्रॉसफर का आर्डर आया कि आपका बाँसवाड़ा ट्रॉसफर किया जाता है। सेवाधाम बिल्डिंग का उद्घाटन तो हो गया। लेकिन जो 100 बच्चे रह रहे हैं।

नन्हा मुन्ना बालक टाबर,
नंग धडंगा डोले रे।
कुण तो वांका दुखडा देखे,
कुण मुखडा सूं बोले रे।।

बडे आदर के साथ स्मरण करता हूँ, परम आदरणीय मिठठालाल जी मेहता जी का, वो हाऊसिंग बोर्ड के चेयरमैन भी रहे, एक बार मैं जयपुर गया था। पी.ए. साहब को स्लिप दी मैं कैलाश अग्रवाल मिलना चाहता हूँ, वे बोले–वैसे तो साहब पूरे राजस्थान के हाऊसिंग बोर्ड के सर्वोतम अधिकारियों की बैठक ले रहे हैं, बोले–मिल पाना मुश्किल है।

मैंने कहा–साहब एक बार अन्दर कहलाने की कृपा तो करें। उन्होंने कहा मैं कहला देता हूँ, कैलाश जी आये हैं, उन्होंने उसी क्षण बुला लिया। उन्होंने कहा–कैलाश जी को बड़े आदर के साथ ले आइये, मैं गया तुरन्त उठकर खड़े हो गये। उनको खड़ा देखकर करीब 200 अधिकारी पूरे राजस्थान के सभी खड़े हो गये, मिठठालाल जी ने अपने पास कुर्सी पर बैठाया, फिर सबसे कहा–देखिये ये कैलाश जी अग्रवाल हैं, नारायण सेवा संस्थान के चेयरमैन। अभी जो हम हाऊसिंग बोर्ड राजस्थान के विकास के बारे में जो भी बातें कर रहे थे, उससे भी महत्वपूर्ण बात मुझे कैलाश जी से करनी है। इसलिए आप बैठिये। हम कैलाश जी से बात करते हैं, मन गद्गद् हो गया, भादसोड़ा वाले मिठठालाल जी मेहता साहब आपने उच्च पद को धन्य किया। 15–20 मिनट बातचीत हुई।

मैंने कहा सेवाधाम नाम से एक भवन बनाया है। अभी 50 वनवासी बच्चे हैं, मैं चाहता हूँ, 100 बच्चों की सेवा करें। उन्होंने उसी समय समाज कल्याण विभाग के सचिव को फोन किया। बोले–नारायण सेवा संस्थान, बोले– हम जानते हैं, बहुत अच्छा कार्य कर रही है। बोले–इसमें 50 बच्चों की संख्या बढा दीजिए। अपने अधिकारियों को भेजिये, ये मानिये मेरी संस्था है, इनके काम को देखिये, इनको सहयोग कीजिये, उन्होंने कहा–हम पहले से नारायण सेवा संस्थान को जानते हैं, बहुत अच्छा कार्य कर रही है। हम बढा देते हैं, 100 बच्चे हो गये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 440 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023